Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 2, Mar-Apr – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 06/04/2020 Accepted on : 19/04/2020 Publication Date: 30/04/2020

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकताओं का तुलनात्मक अध्ययन

हरीश कुमार यादव
प्रवक्ता (शिक्षा विभाग)
रा.च.उ. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उत्तरकाशी
Email- yadavh101@gmail.com

सारांशः प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकता का पता लगाना है। निर्देशन आवश्यकता को मापने के लिए डॉ0 जे0 एस0 ग्रीवाल द्वारा निर्मित और प्रमाणित उपकरण का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु ब्लाक भटवाड़ी जिला उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर कक्षा 12 में अध्ययनरत् 120 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया, चयनित विद्यार्थियों पर निर्देशन आवश्यकता मापनी का प्रशासन करके प्राप्त प्राप्ताकों के आधार पर परिकल्पनाओं के सत्यापन हेतु माध्य, प्रामाणिक विचलन और टी. मूल्य ज्ञात किया गया। अध्ययन के परिणाम स्वरूप शासकीय और अशासकीय, बालक और बालिका, शहरी और ग्रामीण तथा कला और विज्ञान क्षेत्रों के आधार पर विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकता में असार्थक अन्तर पाया गया।

मुख्य बिन्दू : निर्देशन आवश्यकता, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शासकीय व अशासकीय, ग्रामीण व शहरी, कला व विज्ञान।

१ प्रस्तावना :

शिक्षा बालक की जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक, प्रगतिशील व प्रभावशाली विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। आज राष्ट्र के लिए सुयोग्य, प्रशिक्षित, तथा प्रतिभाशाली बालकों को निखारना शिक्षा का दायित्व है जिसके लिए विद्यार्थी की योग्यता, रूचियों, मानसिक स्तर प्रकृति के अनुसार शिक्षा प्रदान करना आवश्यक है इसी आवश्यकता को मुर्त रूप देने के लिए विद्यार्थियों को निर्देशन सेवाओ की अत्यन्त आवश्यकता होती है। जिससे विद्यार्थियों की दैनिक, सामाजिक, शारीरिक, शैक्षिक व व्यावसायिक क्षेत्रों मे समायोजन एंव विकास में सहायता पहुचाई जा सके। शिक्षा मन्त्रालय के अनुसार निर्देशन एक क्रिया है जो व्यक्ति को शिक्षा, जीविका, मनोरंजन तथा मानव क्रियाओं के समाज, सेवा सम्बन्धी कार्यो को चुनने, तैयार करने, प्रवेश करने तथा वृद्धि करने में सहायता प्रदान करती है। निर्देशन जहाँ विद्यार्थियों को विद्यालय व परिवार की विभिन्न परिस्थितियों में सर्वोत्तम समायोजन कराता है, साथ ही विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व शैक्षिक परिस्थितियों के सभी पक्षो का विकास भी कराता है इसलिए निर्देशन विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण सधंटक माना जाता है जो दिशा व दशा को लक्ष्य की ओर ले जाता है। यदि विद्यार्थियों के विकास क्रम में दृष्टिपात करें तो ज्ञात होता है कि वर्तमान सरचना एंव समाज एक जटिल प्रक्रिया है जिससे होकर विद्यार्थियों को गुजरना होता है। प्रायः विद्यार्थी को दैनिक, सामाजिक, शारीरिक, शैक्षिक व व्यावसायिक क्षेत्रों में विभिन्न समस्याओं से गुजरना होता है । जिसके लिए घर, समाज, विद्यालय एंव दैनिक गतिविधियों मे उत्पन्न समस्याओं की निर्देशन आवश्यकता होती है। निर्देशन का उपयोग इसी उद्देश्य की पूर्ति मे सहायक होता है। निर्देशन स्वयं समस्या समाप्त नही करता बल्कि विद्यार्थियों को समस्या समाधान व समायोजन योग्य बनाता ळें

२ सम्बन्धित साहित्य अध्ययन :

- हेमवती नन्दन 2010 ने किशोर बालको के आवश्यक निर्देशन के परिप्रेक्ष्य मे माताओं के शैक्षिक स्तर के आधार पर किशोरों का तुलनात्मक अध्ययन किया। यह अध्ययन कक्षा 11 व 12 क विद्यार्थियों पर किया, जिसमे पाया कि शिक्षित महिलाओ के किशोरों की अपेक्षा अशिक्षित महिलाओं के किशोरों को अधिक निर्देशन आवश्यकता है।
- रितू शर्मा 2015 ने प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अधिगम अक्षमता की शैक्षिक निर्देशन महत्व का अध्ययन किया जो कखा 6, 7 व 8 के अधिगम अक्षम 140 विघार्थियों का चयन ग्रामीण व शहरी आधार पर शिमला, हिमाचल प्रदेश से चयनित किया जिसमे उन्होने पाया प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक निर्देशन के प्रति कोई जागरूकता नही है।

- डॉ. बी. वी. राय 2017 ने हाईस्कूल के विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकता का विश्लेषण किया। 200 विद्यार्थियों के विश्लेषण आधार पर पाया बालक एंव बालिका दोनो की निर्देशन आवश्यकता मे कोई सार्थक अन्तर नही, जबकि शासकीय एंव गैर शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक आवश्यकता में पर्याप्त अन्तर पाया गया।
- प्रो. जय प्रकाश डॉ. सुषमा रानी हुड्डा 2019 ने उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकता का अध्ययन सिरसा हरियाणा के 200 विद्यार्थियों पर किया जिसमें विश्लेषण के पश्चात ज्ञात हुआ कि शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों को अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों से अधिक निर्देशन आवश्यकता है, साथ ही शासकीय विद्यालय की छात्राओं को भी अशासकीय छात्राओं से अधिक निर्देशन आवश्यकता है। और अशासकीय बालकों की निर्देशन आवश्यकता अशासकीय बालिकाओं से ज्यादा है।

३ अध्ययन के लिए समस्या कथन :

प्रस्तुत अध्ययन के लिए समस्या का विवरण उनके प्रबन्धन, लिंग, निवास और सकांय के सम्बन्ध में ''उच्त्तर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकता का तुलनात्मक अध्ययन'' है। समस्या विद्यार्थियों के व्यक्तिगत निर्देशन आवश्यकता के पाँच आयामों शारीरिक, सामाजिक, मानसिक, शैक्षिक और व्यवसायिक से सम्बन्धित है– जिसमें निम्न प्रश्न का उत्तर जानना है – क्या कक्षा 12 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विभिन्न आयामों, शासकीय एंव अशासकीय, बालक एंव बालिका, ग्रामीण एंव शहरी और कला एंव विज्ञान के आधार पर निर्देशन आवश्यकता मे कोई अन्तर है या नहीं।

४ अध्ययन का क्षेत्र :

प्रस्तुत अध्ययन मे कक्षा 12 में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की विभिन्न प्रकार की निर्देशन आवश्यकता का पता लगाना। अध्ययन में चार आयामों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन किया गया है जो निम्न प्रकार है–

- प्रबन्धन : शासकीय एंव अशासकीय
- लिंग : बालक एंव बालिका
- निवास : ग्रामीण एंव शहरी
- सकांय : कला एंव विज्ञान

५ अध्ययन के उद्देश्य :

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक स्तर् कक्षा 12 के विभिन्न विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकता का तुलनात्मक अध्ययन निम्न आयामों के मध्य करना.

- शासकीय विद्यालय और अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के मध्य।
- बालक एंव बालिका के मध्य।
- कला संकाय एंव विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों के मध्य।
- ग्रामीण क्षेत्र एंव शहरी क्षेत्र मे निवास करने वाले विद्यार्थियों के मध्य।

६ अध्ययन की परिकल्पनायें

- उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एंव अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर के बालक एंव बालिका की निर्देशन आवश्यकता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला एंव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एंव शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है।

७ अध्ययन की परिसीमाएं :

- प्रस्तुत शोध अध्ययन जिला उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड, के ब्लॉक भटवाड़ी में सचांलित उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम विद्यालायों मे कक्षा 12 मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों तक सीमित है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन में उद्देश्यों की सम्प्राप्ति के लिए केवल 120 विद्यार्थियों तक सीमित किया गया।

८ अध्ययन में प्रयुक्त प्रयुक्त उपकरण एंव गणना :

प्रस्तुत शोध में जी.एन.आई. निर्देशन आवश्यकता सूची का प्रयोग किया गया। इस मापनी का निर्माण डॉ. जे. एस. ग्रीवाल द्वारा किया गया। इस मापनी में कुल 65 पदों के निम्न पाँच क्षेत्रों : शारीरिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक और व्यवसायिक है। अकंन कथन पर अत्यधिक सत्य, अधिकतर सत्य, पूर्ण सत्य, न्यूनतम सत्य, असत्य पर क्रमशः 0,1,2,3,4 भारांक देने का प्रावधान है। इस सूची के सभी कथन धनात्मक और पूर्ण करने का समय 30 मिनट रखा गया है। उच्च भारांक कम आवश्यकता और निम्न भारांक अधिक निर्देशन आवश्यकता को दर्शाते है जो 0 से 260 के मध्य रहते हैं।

९ अध्ययन में प्रयुक्त विधि :

प्रस्तुत शोध अध्ययन मे सर्वेक्षण का प्रयोग किया गया हैं

जनसंख्या एंव न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन हेतु उत्तराखण्ड विद्यालयी परिषद से सम्बन्धित ब्लाक भटवाडी, जिला उत्तरकाशी के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को शोध कार्य की जनसंख्या माना गया है। प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श चयन हेतु स्तरीकृत यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया है। जिसमे संभाग के 6 विद्यालयों से 120 विद्यार्थियों को शासकीय एंव अशासकीय बालक एंव बालिका ग्रामीण एंव शहरी और कला एंव विज्ञान के हिसाब से चयनित किया गया है।

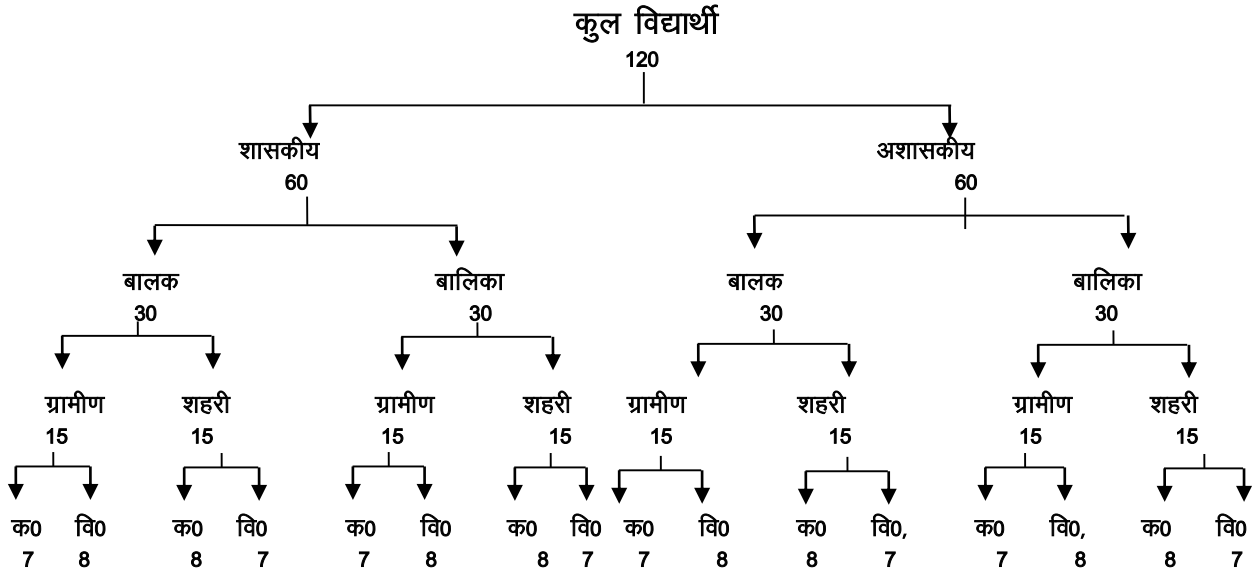

प्रदत्रो का विश्लेषण

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकता का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन और टी0 मूल्य उनके स्कूल प्रबन्धन, लिगं, निवास एंव संकाय के आधार पर।

सारणी क्रमांक – 01

*0.01 एंव *0.05 के स्तर पर असार्थक

क्र.सं.	क्षेत्र	चर	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	एस.ई.डी.	टी. मूल्य
1	प्रबन्धन	शासकीय	60	143.30	17.778	3.358	0.253*
		अशासकीय	60	144.15	18.983		
2	लिंग	बालक	60	144.66	18.923	3.354	0.561*
		बालिका	60	142.78	17.808		
3	निवास	ग्रामीण	60	145.46	18.139	3.343	1.041*
		शहरी	60	141.98	18.490		
4	संकाय	कला	60	142.93	18.065	3.355	0.471*
		विज्ञान	60	144.51	18.691		

सारणी 01 की क्रम सं. 1 के अवलोकन से स्पष्ट है। कि शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकता का मध्यमान 143.70 तथा प्रामाणिक विचलन 17.778, है और अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकता का मध्यमान 144.15 तथा प्रामाणिक विचलन 18.983 है एंव टी मूल्य का परिगणित मान 0.253 है, जो द्विपुच्छीय सार्थकता परीक्षण के लिए 0.01 स्तर पर सारणी मान 2.61 तथा 0.05 स्तर पर सारणी मान 1.98 दोनो से कम है तथा दोनो स्तर पर टी मूल्य का परिगणित मान असार्थक है।

सारणी क्र0 सं0 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि बालकों की निर्देशन आवश्यकता का मध्यमान 144.66 तथा प्रामाणिक विचलन 18.923 और बालिकाओ की निर्देशन आवश्यकता का मध्यमान 142.78 व प्रामाणिक विचलन 17.808 तथा दोनो के मध्य टी मूल्य का परिगणित मान 0.561 है जो द्विपुच्छीय सार्थकता परीक्षण के लिए 0.01 स्तर पर सारणी मान 2.61 तथा 0.05 स्तर पर सारणी मान 1.98 दोनो से कम है तथा दोनो स्तर पर टी मूल्य का परिगणित मान असार्थक है।

सारणी क्रमांक 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकता का मध्यमान 145.46 व प्रामाणिक विचलन 18.139 तथा शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकता का मध्यमान 141.98 व प्रामाणिक विचलन 18.490 है और टी मूल्य 1.041 है जो द्विपुच्छीय सार्थकता परीक्षण के लिए 0.01 स्तर पर सारणी मान 2.61 तथा 0.05 स्तर पर सारणी मान 1.98 दोनो से कम है तथा दोनो स्तर पर टी मूल्य का परिगणित मान असार्थक है।

सारणी क्र0 सं0 4 से स्पष्ट है कि कला वर्ग के विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकता का मध्यमान 142.93 व प्रामाणिक विचलन 18.065 तथा विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकता का मध्यमान 144.51 व प्रामाणिक विचलन 18. 691 और टी मूल्य का परिगणित मान 0.471 है जो द्विपुच्छीय सार्थकता परीक्षण के लिए 0.01 स्तर पर सारणी मान 2.61 तथा 0.05 स्तर पर सारणी मान 1.98 दोनो से कम है तथा दोनो स्तर पर टी मूल्य का परिगणित मान असार्थक है।

आकृति न0 1- विद्यार्थियों के विभिन्न आयामों, शासकीय एंव अशासकीय, बालक एंव बालिका, ग्रामीण एंव शहरी और कला एंव विज्ञान के आधार पर निर्देशन आवश्यकतों का तुलनात्मक अध्ययन

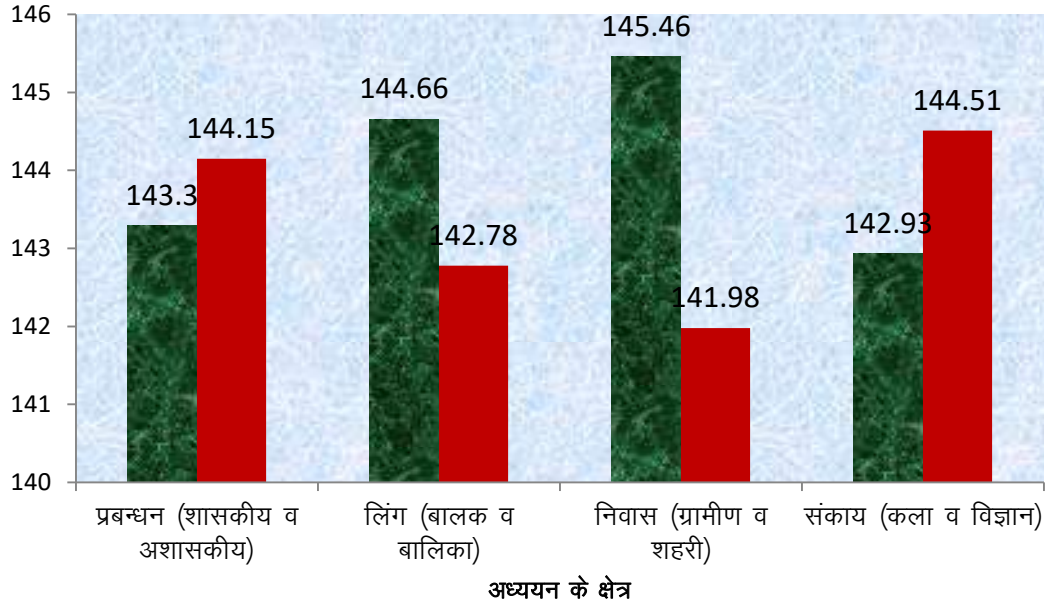

१० अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष :

परिकल्पनाओ के परिप्रेक्ष्य में उपरोक्त विवेचन एंव प्राप्त आकडों के शांखिकीय अध्ययन के उपरान्त शोध अध्ययन के निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए

- उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एंव अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकताओं के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है स्वीकार है अर्थात दोनों ही विघालयों के विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकता समान है। तथा मध्यमान के आधार पर स्पष्ट है कि शासकीय विद्यार्थियों को अशासकीय विद्यार्थियों की अपेक्षा निर्देशन आवश्यकता अधिक है।

- उच्चतर माध्यमिक स्तर के बालक एंव बालिकाओ की निर्देशन आवश्यकता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है स्वीकार है अर्थात बालक व बालिका को समान रूप से निर्देशन आवश्यकता होती है। मध्यमान के आधार पर ज्ञात होता है कि बालिकाओ को बालकों की अपेक्षा अधिक निर्देशन आवश्यकता है।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एंव शहरी विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकता में कोई सार्थक अन्तर नही है स्वीकारीय है। अर्थात ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकता समान है तथा प्राप्त मध्यमान से अवलौकित होता है कि ग्रामीण विद्यार्थियों को शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक निर्देशन आवश्यकता है।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला एंव विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकता मे कोई सार्थक अन्तर नही है स्वीकार है अर्थात दोनों संकाय के विद्यार्थियों की समान निर्देशन आवश्यकता है। प्राप्त मध्यमानों से स्पष्ट है कि कला संकाय के विद्यार्थियों को विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक निर्देशन आवश्यकता है।

११ अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ :

शैक्षिक दृष्टिकोण से विद्यार्थी निर्देशन एक महत्वपूर्ण विचारणीय प्रक्रिया है जिसके उपयोग से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का बहुर्मुखी विकास सम्भव है। उपरोक्त अध्ययन के परिणाम से ज्ञात होता है कि माता–पिता विद्यालय शिक्षक, प्रशिक्षित निर्देशक को सर्व प्रथम विद्यार्थियों की समस्या के समाधान मे सहायता पहुंचानी चाहिए। विद्यार्थियों की शैक्षिक कौशलो, योग्याताओ, आदतों, समस्या समाधान योग्यताओं, सृजनात्मक दृष्टिकोण व कौशलात्मक विकास के लिए निर्देशन कार्यक्रमों की आवश्यकता है जिससे उनकों शारीरिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक व व्यवसायिक क्षेत्रों मे वांछित विकास मिले। निर्देशन आवश्यकताओं के अध्ययन के पश्चात वह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व की विशेष योग्यता को जानने के पश्चात अभिभावको, शिक्षको निर्देशन संचालको को विभिन्न कार्यक्रमों के संचालन एंव रणनितियां बनाने मे सहायता मिलेगी। तथा प्रत्येक विद्यार्थी अपने विकास के लिए एक क्रियात्मक कार्यक्रम तैयार कर अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर ले।

संदर्भ :

१ मेहरा हेमा (2017) माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी छात्रो की निर्देशन की आवश्यकता का तुलुलनात्मक अध्ययन करना North Asian International Research Journal of Multidisciplinary Vol. 3(2). PP 3-5.

२ प्रकाशनी रामेश्वरी सत्तार अब्दुल (2018) वर्तमान में ग्रामीण युवाओं को निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता (दुर्ग जिले के विशेष संदर्भ में) International Journal of Advanced Educational Research. Volume 3(3). PP. 78-80.

३ Dhami M.and Sharma S. 2019. Gender and Locale Differences in Guidance Needs among Adolescents. *Int.J.Curr.Microbiol.App.Sci. VOL.*8(09). PP1743,1745.

४ Rao B. V. (2017). Guidance Needs of High School Students: An analytical study. International Journal of Creative Research Thoughts, Vol 5,PP 2045-2046.

५ Kannammal, R. (2014). A study on Guidance Needs of urban and rural adolescence in relation to the home environment. IOSR Journal of Research & Method in Education (IOSR-JRME), Vol .4(4), PP15-27.

६ Pius, N. Nyutu and Norman, C. Gysbers (2007) Assessing The Counselling Needs of High School Students in Kenya, International Journal for Educational and Vocational Guidance, VOL 8(2). (2008), PP 83 -84.

७ Parhar m.k. kaur k and kaur p.(2013). Guidance needs of secondary school students. International journal of behavioral social and movement sciences. Vol.02(2) pp 84.

८ Balcı S. (2018). Investigating career guidance needs of middle school students. SHS Web of Conferences 48,PP 4-6.